एक नजर में

कृषक कल्याण वर्ष का शुभारंभ

बागली। कृषक कल्याण 2026 का शुभारंभ हुआ इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन बागली जनपद के ग्राम पंचायत आवल्दा लखवाडा एवं अमर पूरा आदि ग्रामों में किया गया यह दौरान नहीं योजनाओं को लेकर विभागीय रुप से स्थानीय किसानों के मध्य संपर्क किया गया । इस महत्वपूर्ण विकसित एवं प्रोत्साहित योजना उनमुलक कार्यक्रम में बड़ी संख्या में क्षेत्र से जुड़े कृषक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंतर्गत कृषि रथ के माध्यम से कृषकों को ई-कृषि टोकन प्रणाली के अंतर्गत ऑनलाइन पंजीयन द्वारा उर्वरक विक्रय की जानकारी दी गई। साथ ही नरवाई न जलाने, उसके उचित प्रबंधन, मिट्टी परीक्षण के महत्व, जैविक एवं प्राकृतिक खेती, तथा खेती को लाभ का धंधा कैसे बनाया जाए—इन विषयों पर विस्तार से मार्गदर्शन प्रदान किया गया। तथा पशुपालन विभाग से डॉ. अनिल योगी द्वारा पशुपालन से संबंधित योजनाओं एवं लाभकारी जानकारियाँ साझा की गईं। इस अवसर पर वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी काशीराम चौहान, ब्लाक टेक्नोलॉजी मैनेजर लोकेश मालवीय, सहायक सचिव हुकुम सिंह सेधंव एवं अन्य कृषक गण कार्यक्रम के दौरान शामिल रहे। गोरतलब है कि शासन द्वारा आने वाले समय में किसानों के लिए और पशुपालन की बेहतरी के लिए अनेक योजनाएं संचालित करने की रुपरेखा तैयार की है। योजनाओं के संबध में किसानों को और पशु पालको को अधिक से अधिक जानकारी मिले इस उद्देश्य से कृषक रथ क्षेत्र में भ्रमण करवाया गया।

बर्तन व्यापारी के यहां लगी आग

पीपलरावां। नगर के मिठीकुंडी स्थित बर्तन व्यापारी धर्मेन्द्र शिवनारायण राठौर के मकान में गुरुवार सुबह करीब 9 बजे अचानक आग लग गई। पहली मंजिल पर लगी आग से उठे धुंए के गुबार को देखकर पड़ोसियों ने घर के अंदर काम कर रहे धर्मेन्द्र राठौर व उनकी पत्नी को सूचित किया। पड़ोसियों व राहगीरों की तत्परता से आधे घण्टे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। आगजनी से गृहस्थी के सामान जलकर खाक हो गया। वहीं दुकान मे बेचने के लिए रखे गिफ्ट सेट, टिफिन व बॉटल से भरे दो बॉक्स, 1 कूलर, 11 गद्दों सहित अन्य सामान भी जल गया। गनीमत रही कि आगजनी से कोई जनहानि नही हुई। नायब तहसीलदार लखनलाल सोनानिया ने तत्काल पटवारी कपिल मेवाड़ा को भेजकर पंचनामा बनवाते हुए नुकसानी का आंकलन किया।

हाई स्कूल अगेरा में वार्षिकोत्सव आयोजित

सोनकच्छ । शासकीय हाई स्कूल अगेरा में गुरुवार को वार्षिक उत्सवआयोजित हुआ हमारे बीच मुख्य अतिथि संकूल प्राचार्य नैना पाठक एवं विशेष अतिथि विष्णु प्रसाद शर्मा उपस्थित थे। अतिथियों एव शिक्षको का स्वागत कक्षा 9 वीं की बालिकाओं द्वारा किया गया। वर्षभर की गतिविधियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं को अतिथियों ने प्रमाण पत्र और पुरस्कार प्रदान किया गया एवं छात्र-छात्राओं ने रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। कक्षा दसवीं के छात्र-छात्राओं को विदाई के अवसर पर कंपास, पेन एवं प्रमाण पत्र वितरित किए गए। छात्र-छात्राओं ने सामूहिक तस्वीर स्कूल में भेंट की गई। इस अवसर पर प्राचार्य मनोहरलाल परमार, राजीव बैरागी, ब्रजकिशोर जाजू, सरोज ठाकूर, लोकेंद्र सिंह सेन्धव, अनवर खान ,विजेंद्र मालवीय व संचालन दलेप सिंह सोलंकी एवं अंत में आभार महेश चंद्र सिसोदिया ने किया।

वार्ड 11 में की जल सुनवाई

देवास। जल सुनवाई अभियान के अन्तर्गत जल गुणवत्ता को लेकर वार्ड में जलसुनवाई की गई। वार्ड क्रमांक 11 में जल सुनवाई के दौरान रहवासियों से पीने के पानी को लेकर चर्चा की। निगम द्वारा की जा रही जल सुनवाई अभियान में वार्डो के रहवासियों के घर पर नल कनेक्शन से व अन्य स्त्रोतों से लिये जा रहे पानी की गुणवत्ता की जांच हेतु पीने के पानी के सेम्पल वार्ड पार्षद व जनप्रतिनिधियों एवं रहवासियों के साथ लिये जा रहे हैं। वार्ड 11 में जलसुनवाई अभियान में वार्ड पार्षद प्रतिनिधि राहूल पवार, निगम उपयंत्री चंदन सोनी व वार्ड सुपर वाईजर आमीन शेख, निगम अमृत मित्र की टीम व निगम जलप्रदाय विभाग के कर्मचारियों के साथ बडी संख्या मे वार्डवासी उपस्थित रहे।

अनुशासित आचरण ही लक्ष्य तक पहुंचाता है : प्रजापति

देवास। स्थानीय श्री नारायण विद्या मंदिर क्रमांक एक में वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सहायक संचालक शिक्षा शिवनंदन प्रजापति थे। विशेष अतिथि के रूप में बगाना हायर सेकेंडरी स्कूल के प्राचार्य अजय सोलंकी, नूतन स्कूल के प्राचार्य अशोक साहू एवं सेवानिवृत्त शिक्षक मनोहर लाल पटेल उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्थानीय पार्षद प्रतिनिधि नितिन आहूजा ने की। मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। छात्रों ने सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया। अतिथियों का स्वागत प्राचार्य के के मिश्रा, जनशिक्षक सहज सरकार, एन सी सी अधिकारी राधेश्याम सोलंकी, वरिष्ठ शिक्षिका पम्मी नाथ, निर्मला पंवार, प्रीति जोशी ने किया। विद्यालय के वार्षिक प्रतिवेदन का वाचन प्राचार्य के के मिश्रा ने करते हुए सत्र में विद्यालय की उल्लेखनीय उपलब्धियों से अवगत करवाया। संस्था के शिक्षक मिर्ज़ा मुशाहिद बैग ने बताया कि संस्था की वर्षभर विविध गतिविधियों में तथा साहित्यिक, सांस्कृतिक, विज्ञान, क्रीड़ा, एन सी सी, एन एस एस, में उत्कृष्ट प्रदर्शन करके अव्वल स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर छात्रों को संबोधित करते हुए श्री प्रजापति ने कहा कि जीवन में अनुशासन का होना नितांत आवश्यक है, विशेषकर छात्र जीवन में ।एक अनुशासित विद्यार्थी ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है ।अपने अनुशासित, संस्कारित आचरण से समाज में एक अनुकरणीय छवि स्थापित कर सकता है ।आप सभी अच्छी शिक्षा ग्रहण करें, अपना, अपने परिवार समाज का नाम रोशन करें।

देवास सिटी ट्रांसपोर्ट में करोड़ों की अनियमितता का आरोप

लोकायुक्त जांच के बाद न्यायालय में अभियोजन की मांग

देवास। सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड में बस संचालन, सब्सिडी वितरण और रूट परिवर्तन को लेकर गंभीर अनियमितताओं के आरोप सामने आए हैं। पुलिस लोकायुक्त द्वारा की गई जांच के आधार पर प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी, देवास के समक्ष आवेदन प्रस्तुत कर तत्कालीन अधिकारियों को आरोपी बनाए जाने की मांग की गई है। लोकायुक्त जांच में प्रथम दृष्टया यह पाया गया कि देवास सिटी ट्रांसपोर्ट में पदस्थ अधिकारियों द्वारा निजी ऑपरेटरों के साथ मिलीभगत कर पद का दुरुपयोग किया गया, जिससे शासन को राजस्व हानि पहुंची और निजी ट्रांसपोर्टरों को अनुचित आर्थिक लाभ मिला।

जांच में सामने आए प्रमुख बिंदु

जांच के दौरान यह तथ्य सामने आया कि बसों के रूट परिवर्तन बिना बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की स्वीकृति के कर दिए गए। निर्धारित क्लस्टर के बजाय बसों को अधिक लाभकारी मार्गों पर चलाया गया। कुछ बसों का संचालन निजी ट्रांसपोर्ट कंपनी के नाम पर किया गया, जबकि वास्तविक संचालन अन्य निजी ऑपरेटरों द्वारा किया जाता रहा।

लोकायुक्त रिपोर्ट के अनुसार, पांच पुरानी बसों को बेचने की अनुमति के बाद भी एक वर्ष से अधिक समय तक नई बसें नहीं खरीदी गईं। इसके बावजूद संबंधित बसों पर शासन द्वारा लगभग 23 लाख 86 हजार 800 रुपये की सब्सिडी जारी की गई, जिससे शासन को सीधी आर्थिक क्षति हुई।

सब्सिडी घोटाले के आरोप

जांच में यह भी पाया गया कि बिलों और इनवॉइस का विधिवत मिलान किए बिना फर्जी एवं बढ़ी-चढ़ी राशि के बिलों को स्वीकृति दी गई। उदाहरण के तौर पर 100 रुपये मूल्य के उपकरण का बिल 150 रुपये दर्शाया गया, जिस पर उसी अनुपात में सब्सिडी स्वीकृत कर दी गई। इससे शासन और आम जनता को आर्थिक नुकसान पहुंचा।

न्यायालय से अभियोजन की मांग

फरियादी धर्मेंद्र सिंह चौहान द्वारा न्यायालय में प्रस्तुत आवेदन में मांग की गई है कि लोकायुक्त जांच में सामने आए तथ्यों के आधार पर संबंधित अधिकारियों को आरोपी बनाकर उनके विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की धारा 353 सहित अन्य प्रासंगिक धाराओं में अभियोजन स्वीकृत किया जाए। मामले में अन्य तर्क मौखिक रूप से भी माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किए जाएंगे।

फिलहाल यह मामला न्यायालय में विचाराधीन है और आगे की कार्रवाई न्यायालय के निर्णय पर निर्भर करेगी।

इधर शिकायत कर्ता धर्मेंद्र सिंह चौहान का कहना है कि यदि जरूरत पड़ी तो हम इस मामले को सर्वोच्च न्यायालय तक ले जाएंगे।

अधिकारियों की भूमिका संदिग्ध

लोकायुक्त जांच में तत्कालीन सीईओ विशाल सिंह चौहान, सीओओ प्रदीप सोनी एवं अन्य सूर्यकांत तिवारी इन अधिकारियो की भूमिका संदिग्ध पाई गई। जांच रिपोर्ट में उल्लेख है कि अधिकारियों ने अपने पद और अधिकारों का दुरुपयोग कर निजी ट्रांसपोर्ट ऑपरेटरों को लाभ पहुंचाया तथा नियमों के विरुद्ध निर्णय लिए। बसों के संचालन में अनियमितता पाए जाने के बावजूद कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं की गई।

बागली स्वास्थ्य केंद्र में रक्तदान शिविर

बागली। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बागली में 2026 गुरुवार को मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर सरोजिनी जेम्स बैक के निर्देशन में एवं मुख्य खंड चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर अमित नागर के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया इस शिविर की विशेषता यह रही कि स्वास्थ्य विभाग से जुड़े वरिष्ठ चिकित्सको सहित स्वास्थ्य विभाग के 25 से अधिक कर्मचारियों ने रक्तदान शिविर में भाग लेकर आम जनता को प्रोत्साहित किया ।शिविर में मुख्य खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ अमित नागर एवं वरिष्ठ चिकित्सक डॉ हेमंत पटेल डॉक्टर अखिलेश मिश्रा डॉक्टर दिनेश सोलंकी डॉ अमित पुरोहित डॉ ऋषि श्रीवास्तव द्वारा रक्तदान कर कर्मचारियों को प्रेरित किया गया शिविर में कुल 25 लोगों द्वारा रक्त दान किया गया शिविर में देवास जिला चिकित्सालय की टीम एवं ब्लॉक से बी ई ई आर एस चौहान बीपीएम रतन सिंह जामले बीसीएम यतींद्र बैरागी सेक्टर सुपरवाइजर नंदकिशोर मोहवाल अनिल जोशी अनिल ठाकरे राजकुमार भगोले राजेश गुर्जर योगिता योगी एवं अन्य कर्मचारी का विशेष योगदान रहा रक्तदान करने वाले वर्तमान बीएमओ अमित नगर वरिष्ठ चिकित्सक डॉक्टर हेमंत पटेल अखिलेश मिश्रा दिनेश सोलंकी अमित पुरोहित ऋषि श्रीवास्तव आदि ने बताया कि रक्तदान महादान है। ऐसा करने से आप कई लोगों की जिंदगी बचाते हो आगामी दिनों में जब भी बागली स्वास्थ्य केंद्र पर रक्तदान शिविर का आयोजन हो तो जन्म प्रतिनिधि और युवाओं से अपील है कि वह इस कार्य में बढ़ चढ़कर इस साल और अधिक से अधिक यूनिट रक्तदान बागली ब्लॉक वासीयो की ओर से ब्लड बैंक में सुरक्षित हो।

शिक्षण संगोष्ठी का आयोजन 7 फरवरी को

देवास। शिक्षा के क्षेत्र में एक नए युग की शुरुआत का संकेत देते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 क्रियान्वन एवम चुनौतियाँ विषय पर केंद्रित वृहदस्तरीय शिक्षण संगोष्ठी का आयोजन 7 फरवरी 2026, शनिवार को सेन थॉम एकेडमी, भोपाल रोड देवास में, प्रात: 11.30 पर किया जाएगा। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के नियम व उद्देश्यों, क्रियान्वयन और चुनौतियों पर गहन चिंतन होगा, जिसे शिक्षा जगत के लिए एक महाकुंभ के रूप में देखा जा रहा है। अशासकीय शिक्षण संस्था संचालक संघ के अध्यक्ष राजेश खत्री, उपाध्यक्ष सैयद मकसूद अली और सचिव दिनेश मिश्रा ने स्थानीय न्यू चिल्ड्रन होम स्कूल में प्रेस वार्ता में जानकारी देते हुए बताया कि संगोष्ठी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की निर्माण समिति के प्रमुख, विचारक और शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी मुख्य वक्ता होंगे, जो अपने अनुभवों और विचारों से नीति के हर पहलू पर मार्गदर्शन देंगे। कार्यक्रम के बतौर मुख्य अतिथि प्रो. एस. के. जैन (कुलपति, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल), प्रो. देव आनन्द हिण्डोलिया (कुलपति, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल) एवम ओम प्रकाश शर्मा (राष्ट्रीय संयोजक, आत्म निर्भर भारत, नई दिल्ली) होंगे, जो अपने उद्बोधन से शिक्षा के भविष्य को नई दिशा देंगे। संगोष्ठी में नीति से जुड़ी चुनौतियों को प्रत्यक्ष रूप से समझने का अवसर मिलेगा । कार्यक्रम में नगर के विद्यालयों, महाविद्यालयो, शिक्षा महाविद्यालयो, सामाजिक संगठन एवं शिक्षण संस्थान, के संचालक, प्राचार्य, संस्था प्रमुखों के साथ शिक्षाविद, साहित्यकार, पत्रकार व बुद्धिजीवी वर्ग उपस्थित होगा। सभी के मध्य विचारों का आदान-प्रदान होगा। इस शिक्षण संगोष्ठी में भाग लेकर शिक्षा नीति के विभिन्न पहलुओं पर विशेषज्ञों के विचार सुनने का मौका मिलेगा, जिससे शिक्षा जगत में सकारात्मक परिवर्तन के लिए नए विचार प्राप्त होंगे और भविष्य के शिक्षकों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की प्रेरणा मिलेगी। संगोष्ठी न केवल एक चर्चा का मंच है, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार और विकास के नए रास्ते खोलने का एक महत्वपूर्ण कदम भी है। उक्त जानकारी संगठन के मीडिया प्रभारी शकील कादरी, आदित्य दुबे, अबरार अहमद शेख ने संयुक्त रूप से दी।

अतिक्रमण विवाद में आत्मदाह के प्रयास में झुलसे संतोष व्यास का भी निधन

पत्नी की मौत पहले हो चुकी हैं
आक्रोशित नागरिकों ने बस स्टैंड पर किया 4 घंटे चक्काजाम
व्यापारिक प्रतिष्ठान रहे बंद
दोषी अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग

सतवास-सतवास नगर में अतिक्रमण हटाने के दौरान हुई आत्मदाह की घटना में गुरुवार को बड़ा घटनाक्रम सामने आया।

शाहकीय जगह नाली पर से अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई से जुड़े विवाद में आत्मदाह करने वाले व्यास दंपति में से पति संतोष व्यास का गुरुवार सुबह निधन हो गया। इससे पहले 11 जनवरी को उनकी पत्नी जयश्री व्यास की मौत हो चुकी थी। सूत्रों के अनुसार संतोष व्यास की मौत इंदौर में इलाज के दौरान सर्जरी के समय हुई। वे बीते एक महीने से अधिक समय से इंदौर में इलाजरत थे।

संतोष व्यास के निधन की खबर मिलते ही परिजन, ब्राह्मण समाज के लोग और स्थानीय नागरिक आक्रोशित हो गए। सभी ने सतवास बस स्टैंड के पास मुख्य मार्ग पर बैठकर चक्काजाम कर दिया, जिससे आवागमन पूरी तरह बंद रहा। यह चक्काजाम करीब 4 घंटे तक जारी रहा। उल्लेखनीय है कि 24 दिसंबर को सतवास थाना क्षेत्र में नाली पर से अतिक्रमण हटाने को लेकर हुए विवाद के दौरान संतोष व्यास और उनकी पत्नी ने आत्मदाह कर लिया था, जिसमें दोनों गंभीर रूप से झुलस गए थे। इलाज के दौरान पहले पत्नी जयश्री व्यास की 11 जनवरी को मौत हुई और अब गुरुवार को संतोष व्यास ने भी दम तोड़ दिया।

प्रदर्शन कर रहे परिजन और समाजजनों की मांग थी कि आत्मदाह प्रकरण में जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ तत्काल प्रकरण दर्ज की जाए, पूरे मामले की निष्पक्ष और शीघ्र जांच कराई जाए, पीड़ित परिवार को मुआवजा व सहायता दी जाए तथा भविष्य में इस तरह की कार्रवाई से पहले जनसुनवाई और संवाद की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। परिजन उस समय के सतवास तहसीलदार अरविंद दिवाकर, नगर परिषद सीएमओ चुन्नीलाल जोनवाल सहित अन्य लोगों पर कार्रवाई की मांग कर रहे थे। प्रदर्शन के दौरान क्षेत्रीय विधायक मुरली भंवरा के खिलाफ भी मुर्दाबाद के नारे लगाए गए। 44 दिन बीत जाने के बावजूद कोई ठोस कार्रवाई नहीं होने से लोगों में प्रशासन और जनप्रतिनिधियों के प्रति भारी नाराजगी देखी गई। सूचना मिलने पर कन्नौद एसडीओपी आदित्य तिवारी और एसडीएम कन्हैयालाल तिलवारी मौके पर पहुंचे और परिजनों व समाज के लोगों से चर्चा कर लिखित में आश्वासन दिया की तीन दिवस के अंदर जांचकर कार्रवाई की जाएगी। भारी तनाव की स्थिति को देखते हुए चार से अधिक थानों का पुलिस बल तैनात किया गया। कन्नौद एसडीओपी आदित्य तिवारी ने बताया कि 24 दिसंबर को सतवास थाना क्षेत्र में पति-पत्नी द्वारा आत्मदाह की घटना हुई थी,

जिसमें 11 जनवरी को संतोष व्यास की पत्नी जय श्री व्यास की मृत्यु हो गई थी

और गुरुवार सुबह करीब 7 बजे उनके पति संतोष व्यास का भी निधन हो गया। इसी के चलते समाज जन ओर आम नागरिकों ने चक्काजाम किया था। प्रशासन द्वारा जल्द जांच पूरी कर, यदि अपराध बनता है तो विधिसंगत कार्रवाई करने का आश्वासन दिया गया, जिसके बाद चक्काजाम समाप्त कराया गया। करीब 4 घंटे तक चले चक्काजाम के कारण मुख्य मार्ग पर आवागमन बंद रहा। संतोष व्यास का शव दोपहर करीब 3 बजे सतवास लाया गया ।देर शाम स्थानीय मुक्तिधाम में भारी पुलिस बल की उपस्थिति में उनका अंतिम संस्कार किया गया। एक ही परिवार में पति-पत्नी की मौत से परिवार सदमे में है।

तहसीलदार पर कार्रवाई को लेकर हुए थे जिलेभर में प्रदर्शन

24 दिसंबर की घटना के दौरान मौके पर सतवास तहसीलदार अरविंद दिवाकर मौजूद थे। घटना के लिए उन्हें जिम्मेदार मानते हुए ब्राह्मण समाजजनों ने पूरे जिले में विरोध प्रदर्शन किए थे और तहसीलदार सहित अन्य जिम्मेदार अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग की थी। सतवास में समाजजनों और नगरवासियों ने घटना वाले दिन करीब पांच से छह घंटे तक मार्ग जाम किया था। इसके बाद अंचल के विभिन्न स्थानों पर ज्ञापन भी सौंपे गए थे।

टेक्समो कम्पनी द्वारा बिना अनुमति प्रचार, निगम ने की कार्रवाई

पेम्पलेटस निकाले गये तथा रूपये 15 हजार की मौके पर ही चालानी कार्यवाही की

देवास। शहर में बिना अनुमति सार्वजनिक स्थानों पर प्रचार प्रसार पेम्पलेटस लगाये जाने पर कार्यवाही की गई। जिसके अन्तर्गत निगम की रिमूव्हल टीम द्वारा सख्त कार्यवाही करते हुए टेक्समों कंपनी पर 15 हजार की चालानी कार्यवाही की गई साथ ही शहरभर में लगाए गए सभी पेम्पलेटस तत्काल प्रभाव से हटवाए गए। उल्लेखनीय है कि स्वच्छता सर्वेक्षण के तहत आयुक्त दलीप कुमार के निर्देशानुसार शहर के मुख्य मार्गो, चौराहों एवं अन्य मार्गो पर किसी भी प्रकार के लगे हुये प्रचार प्रसार के फ्लेक्स हार्डिंग या पेम्पलेटस हटाये जाने की कार्यवाही निरंतर की जा रही है। टेक्समो कम्पनी के द्वारा कम्पनी के प्रचार प्रसार के पेम्पलेटस मुख्य मार्गो पर निगम की बिना अनुमति लगाये जाने पर निगम की रिमूवल टीम द्वारा नियमों के

उल्लंघन को गंभीरता से लेते हुए कार्यवाही कर पेम्पलेटस निकाले गये तथा राशि रूपये 15 हजार की मौके पर ही चालानी कार्यवाही की गई। शहर की सुंदरता एवं स्वच्छता बनाए रखने के लिए बिना अनुमति किसी भी प्रकार के प्रचार-प्रसार सामग्री लगाने पर सामग्री हटाने तथा संबंधितों के खिलाफ चालानी कार्यवाही की जावेगी। कार्यवाही के दौरान निगम मुख्य स्वच्छता निरीक्षक रवि गोयनार एवं स्वच्छता निरीक्षक शंकर सांगते के साथ रिमूवल टीम उपस्थित रही।

माफिया द्वारा काटी जा रही लकड़ी प्रशासन मौन

टोंक खुर्द। जिला मुख्यालय देवास की तहसील टोंक खुर्द के सेक्टर चौबाराधीरा मे एवं क्षेत्र के ग्रामीण अंचल में लक्कड़ माफिया की मनमानी से अवैध प्रकार से वर्षों पुराने फलदार पेड़ों की अंधाधुन कटाई की जा रही है। शासन प्रशासन मोन है। चौबाराधीरा सहित क्षेत्र के आसपास के ग्रामीण अंचल में लक्कड़ माफियो की भरमार है। और लकड़िया काटकर रात्रि के समय अपने अपने वाहनों से भरकर सीधी आरा मशीन पर पहुंचाई जा रही है। लक्कड़ माफियो ठेकेदार एवं आरा मशीन के मालिकों के विरुद्ध शासन के नियम अनुसार वैधानिक दंडात्मक कड़ी करने की मांग की क्षेत्र के लोगों ने। एक तरफ तो शासन पौधारोपण अभियान चलाकर पौधा लगाने का संकल्प लेकर पौधारोपण किया जा रहा है दूसरी तरफ पेड़ों की बलि चढ़ाई जा रही है। राजस्व विभाग की गंभीर लापरवाही के कारण क्षेत्र रेगिस्तान बनने की कगार पर है। इस संबंध मे टोंक खुर्द तहसीलदार गौरव निरंकारी से मोबाइल के माध्यम से चर्चा की गई तो मोबाइल रिसीव नहीं किया गया।

एक नजर ग्राम पुरोनी में आयोजित रात्रि कालीन सत्संग समारोह में सतपाल जी महाराज के शिष्य ने दिया अध्यात्मिक संदेश

अध्यात्म से ही मन में सुख-शांति आएगी : संत हरिसंतोषानंद

देवास। अध्यात्म एक वैज्ञानिक मार्ग है। इसमें हमें निष्पक्ष होकर आध्यात्मिक सच्चाइयों का स्वयं परीक्षण करना चाहिए, जो कुछ हम सुनते हैं अथवा पढ़ते हैं, उसे तोते की तरह रटने के स्थान पर हमें स्वयं उसका अनुभव करना चाहिए। वह परमात्मा घट-घट में बस रहा है, सारे महापुरुष यही पुकार-पुकार कर चले गए, जो घट में है, वह बाहर कैसे मिलेगा ? ईश्वर का वास हमारे शरीर रूपी मंदिर में है, पर हम उसे बाहर के मंदिर-मस्जिद तीर्थ स्थानों ओढंपर खोज रहे हैं। यह विचार अभा. सामाजिक व आध्यात्मिक संस्था मानव उत्थान सेवा समिति की पुरोनी शाखा द्वारा ग्राम के हनुमान मंदिर परिसर में आयोजित रात्रि कालीन सद्भावना सत्संग समारोह में तीर्थ नगरी हरिद्वार से पधारे श्रीसतपालजी महाराज के परम शिष्य महात्मा हरि संतोषानंद ने व्यक्त किये। बड़ी संख्या में उपस्थित अध्यात्म प्रेमियों को संबोधित करते हुए संत श्री ने कहा मन में अगर बुराई भरी

होगी,तो हमारे विचार और कर्म भी वैसे ही होंगे। क्षमा के पानी से मन की सारी मैल धूल जाती है। भूल जाओ और माफ कर दो यह मूल मंत्र है, ईश्वर को पाने का। अध्यात्म के बिना मन में स्थाई शांति स्थापित नहीं हो सकती। उन्होंने कहा हम धन, हीरे, जवाहरात, सुख-वैभव प्रसिद्धि और ताकत पा सकते हैं, परंतु जब तक हमारे पास प्रेम का उपहार नहीं है, हम सच्ची खुशी और शांति नहीं पा सकते। यह सब अपने जीवन में अध्यात्म को अपनाने से ही समझ में बात आती है। अपनी ओजस्वी वाणी में संत श्री ने कहा यह मानव शरीर मोक्ष प्राप्त करने का एक साधन है। इसमें हम अपनी आत्मा का कल्याण कर सकते हैं। इसलिए ध्यान करने की, सत्संग । इस मौके पर उपस्थित संत रेणुका जी ने अपने सत्संग विचार रखते हुए कहा प्राणी ईश्वर का अंश है। मनुष्य का असली रूप चेतन है, पवित्र है क्योंकि उसमें कोई मल, मेला या अशुद्धि नहीं है। वह सुखों का भंडार है। इतना सब होते हुए भी संसार में हर कोई धन, संपत्ति, विद्या-वैभव, मान सम्मान आदि होते हुए भी क्यों दुखी हो रहा है। अपने परिवार, समाज, राष्ट्र को भी संकट में डाल रहा है। आश्चर्य की बात है कि सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग में भी अनेक महापुरुष संसार में आए। उन्हें पूजा भी जाता है, लेकिन उनके मानने वाले विचार कब करेंगे कि उन्होंने क्या मानव को मानव से लड़ना सिखाया। उपस्थित संत प्रभावती व शरदबाई जी ने भी ज्ञान-भक्ति, वैराग्य से ओतप्रोत मधुर भजन प्रस्तुत किये।